AVI
AYURVEDA

DETOX ORGAN MANUAL

Scan QR Code to know more about Detox Organ Manual and many more 100% Natural Products

हमारे शरीर में जमा हुए (विष) Toxins

Controlable

- Smoking धूम्रपान
- Tobacco तंबाकू
- मैदे से बने खाद्य पदार्थ
- मसालेदार भोजन
- Alcohol शराब

Uncontrolable

- Air Pollution वायुप्रदूषण
- खेतों में इस्तेमाल Pesticides (कीटनाशक) यूरिया जो हमारे भोजन में आ जाते हैं
- Virus, Fungus, Bacteria

आप इन Toxins (विषाक्त पदार्थों) से जरूर वाकिफ होंगे। किसी भी कारण से आए Controlable or Uncontrolable Toxins (विषाक्त पदार्थों) हमारे शरीर की कार्यप्रणाली को खराब करते हैं तथा पोषक तत्वों को शरीर में अवषोषित (Absorb) होने से रोकते हैं। जिसके फलस्वरूप शरीर कमजोर पड़ता है और रोगी बन जाता है।

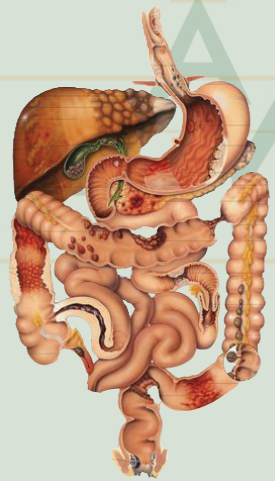

Unhealthy Gut

Healthy Gut

Toxins (विषाक्त पदार्थों) के बढ़ने के लक्षण:-

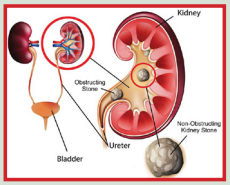

Kidney Stone

- कब्ज, गैस, एसिडिटी, पेटदर्द, आंतों में सूजन, भोजन का सही तरीके से न पचना।
- खून में यूरिक एसिड का बढ़ जाना जिसके कारण जोड़ दर्द एवं हृदय रोग उत्पन्न होना।
- किडनी स्टोन, फैटीलिवर, जौंडिस।
- इम्यूनिटी कम होना।
- त्वचा संबंधित रोगों का उत्पन्न होना।
- मोटापा।
- आलस आना।
- शरीर में भारीपन महसूस होना।
- बवासीर खूनी व बादी
- शरीर में किसी भी प्रकार की गांठ उत्पन्न हो जाना।
- पसीने की बदबू

Healthy Liver

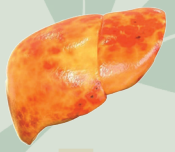
Fatty Liver

Uric Acid

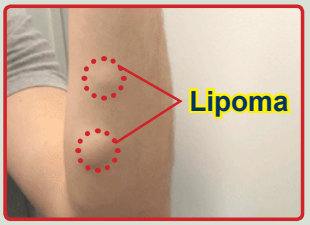

उपरोक्त लक्षण उत्पन्न होने के बाद अगर शरीर को निंविषीकरण कर लिया जाए तो व्यक्ति समूल स्वस्थ निरोगी हो सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति भी चाहे तो साल में दो-तीन बार अपने शरीर को निंविषीकरण करके इन लक्षणों को आने से रोक सकता है और स्वस्थ एवं लम्बी उम्र पा सकता है।

उदाहरण:-

- जब हम अपने वाहन स्कूटी, बाइक व कार को लम्बे समय तक चलाते है। तब कुछ समय बाद उनकी Performance (कार्यक्षमता) Toxin के आने से कम हो जाती है, और सर्विस यानि Oil Change, Air Filter change, Spark Plug Change करवाने से उसी गाड़ी की Performance बढ़ जाती है पर हम इस शरीर के Organ को change तो नही कर सकते लेकिन समय-समय पर Detoxification (निंविषीकरण) करके हम स्वस्थ रह सकते है। इसके अनेक उदाहरण आपके आगे है जो आपके आस-पास ही है जैसे- बल्ब के ऊपर (धूल) आ जाए तो उसकी रोशनी कम हो जाती है मात्र धूल हटाने से वही बल्ब अपनी पूरी रोशनी देना शुरू कर देता है।

Healing Crycis

Detoxification (निंविषीकरण) शोधन सफाई करते समय आए हुए Temproray Challenges

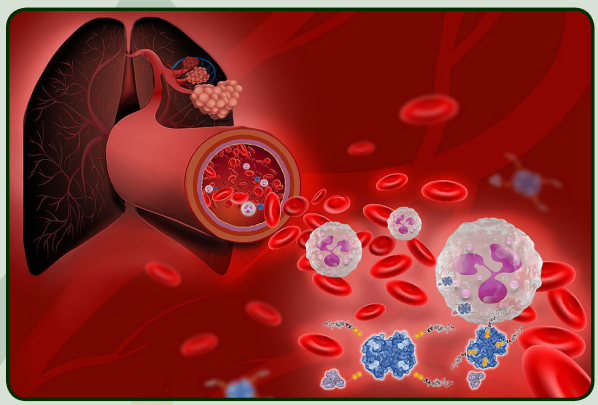

1. मल (Stool) शौच का रंग काला हो जाना।
2. मल व मूत्र त्याग दो से चार बार होना।
3. पेट में मरोड़ का होना।
4. उल्टी (Vomiting) का आभास होना या हो जाना।
5. किसी दबी हुई पुरानी बीमारी का जैसे बुखार Virus का Temporary आभास होना।

Wanted or Unwanted तरीके से लंबे समय तक जब टॉक्सिन हमारे शरीर (Organs) में जमा हो जाता है, तब सिर्फ पेट साफ करने से उन्हें बाहर नहीं निकाला जा सकता।

हमें कुछ जड़ी-बूटी (औषधि) का उपयोग करना पड़ता है। जिससे ऑर्गन्स (Organs) उन टॉक्सिंस को छोड़ देते है तथा कमजोर कोशिकाओं (Cells) को पुनः ताकत मिले और (Organ) अपना काम सही से करें।

उदाहरणः-

जिस प्रकार गंदे कपड़े को सिर्फ पानी से धोने पर पूरी तरह साफ नहीं होता, उसके बारीक कणों में गंदगी जमा रह जाती है, उसे साफ करने के लिए किसी साबुन का इस्तेमाल करना जरूरी होता है।

रसोईघर में बर्तन धोने वाले Sink की Pipe:- भोजन की थाली में मात्र 0.001% खाना रह जाता है जिसे हम साफ करते हैं। मगर 6 से 8 माह के अंदर उस Pipe की दीवारों पर परत जब जम जाती है और पता भी नहीं चलता उसकी साफ सफाई करनी पड़ती है। मगर हमारी आँते 99.9% भोजन ग्रहण करती है सोचिए! आँतों का क्या होगा। जड़ी बूटियों की सही मात्रा और सही गुणवत्ता का चयन मात्र अक्सर कुछ लोग जड़ी बूटियों के मूल्य के आधार के अनुसार अनुमान बनाते हैं और एक दवा का मूल्य निकालते हैं। मगर जड़ी बूटियों के रसगुण, वीर्य, विभाग के और सेवन मात्रा के अनुसार योग बनाएँ तो उस औषधि के गुण हमेशा सर्वोत्तम मिलेंगे।

Detox Organ के योग की हर एक जड़ीबूटी के गुण अपने आपमें अतुल्य है, जिसको आप अलग-अलग भी पढ़ सकते हैं। और सही मात्रा में योग इस औषधि को संपूर्ण करता है।

गुणवत्ता:-

- स्थान
- सूखना
- मिट्टी और कंकड़ रहित
- कीड़ा ना लगा हो
- सुगंध और स्वाद
- खरपतवार रहित
- पुरानी नहीं

एक माह की पैकिंग क्यों? कम क्यों नहीं-

जब विष (Toxins) ज्यादा एवं पुराना हो जाता है, तब उसे बाहर निकालना मुश्किल हो जाता है। 30 दिनों तक लगातार सेवन करने से पुराने विष (Toxin) छूट जाते हैं जो मल मूत्र के रास्ते बाहर निकलते हैं।

उदाहरण:-

जब कोई कपड़ा ज्यादा गंदा हो जाता है तो उसे सर्फ पानी में रात भर या 24 घंटे के लिए भिगोना पड़ता है ताकि कपड़े के रेशे में जमा मैल छूट जाए तुरंत धोने से नहीं साफ होता।

No Added Sugar and Salt

We care about diabetic and B.P. high patient So concern about that use don't mix anytype of Sugar and Salt; If anyone wants to add for taste they can add it.

कुटकी: (Picrorrhiza Kurrooa)

आज के इस विष (Toxin), भारी खान-पान में कुटकी (Latin Name: Picrorrhiza Kurrooa) एक वरदान की तरह काम करती है। यह कड़वी व शीतल (ठंडी), हल्की, दीपन, हृदय को पुष्ट करने वाली, ज्वरनाशक, मृदु विरेचक, क्षुधावर्धक और कृमिनाशक होती है। यह कफ, पित्त, मूत्ररोग, दमा, हिचकी, रक्त रोग, जलने, त्वचा रोग, पीलिया रोग में लाभदायक है।

यह एक मूल्यवान कटु पौष्टिक वस्तु है, आमाशय की पीड़ा, बदहजमी, हिचकी और आंतों की शिथिलता में तथा कब्जियत में यह लाभदायक है। आँतों में चिपके मल (Toxins) को ढीला करके दस्त साफ करते हैं। पेट में पानी भर जाना (फूल जाना) ऐसी अवस्था में बहुत लाभकारी है। सूजन को खत्म करने में मदद

करती है। मुलेठी के साथ योग होने से रक्त-पित्त (Blood में Toxin) को कम करता है जिससे हृदय रोगी को फायदा मिलता है। यकृत (Liver) के लिए यह सर्वश्रेष्ठ औषधि मानी जाती है।

आँवला: (Phyllanthus Emblica)

आयुर्वेद जगत में आँवला को सर्वोत्तम गुणकारी फल कहा जाता है हर ग्रंथ में चरक सुश्रुताकि ग्रन्थों में आँवले से बने काफी योग लिखे हैं, जिनमें चवनप्राश सबसे ज्यादा प्रचलित है। 6 रसों में से अकेले 5 रस अमल, मधुर, कटु, तीक्ष्ण तिक्त, कषाय पाए जाते हैं। आधुनिक जगत के अनुसार vitamin-c का भंडार है जो इसके रस और Fiber (रेशों) में भरपूर मात्रा में पाया जाता है जिसकी आवश्यकता शरीर को Detox करने में पड़ती है इसी कारण यह मूत्रल भी होते हैं। आजकल हवा में भी टॉक्सिन की मात्रा (Pollution) अधिक हो गयी है और लोग धूम्रपान भी करते हैं, इसके प्रभाव को कम करने के लिए (Detox) आँवला एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इसमें खनिज (minerals) भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं साथ ही Alkaline Property भरपूर मात्रा में होती है। Antioxidant Property भरपूर मात्रा में होने के कारण विजातीय द्रव्य (Free Radical) अटैक को रोकता है और शरीर की कोशिकाओं (Cells) का नवीनीकरण करता है। यह वात, पित्त और कफ यानी त्रिदोषनाशक है, लेकिन पित्त की अधिक मात्रा को कम करने में सहायक होता है। अमाशय में (HCl) हो या खून (Blood) में अम्लता (Toxins) दोनों को Detox करने में सहायक होता है। अधिक पित्त होने से आमाशय, आँतों यकृत पर छाले उत्पन्न हो जाते हैं।

शीतल प्रकृति होने से छालों में आराम मिलता है तथा वह जल्दी ठीक भी हो जाते हैं। इसके अलावा यह केशों की (Hair Fall) रोकता है।

अरूचि, दाह, प्रेमह, शोथ, विषम ज्वर, तृष्णा, मेदवृद्धि, अफारा, भ्रम, अम्लपित, कास, थकावट, कब्ज, कुष्ठ आदि, रक्तविकार, रक्तपित्त आदि रोगों में लाभकारी है।

ग्रन्थों में इसको रसायन भी कहा गया है जिससे यह वीर्यजनक व वीर्यदोषनाशक भी हो जाता है।

कलौंजी: (Black Seed)

कलौंजी: (Black Seed) Latin Name & Nigella Sativa

गुणधर्म उपयोग:- ग्रन्थों में कलौंजी के बीज शरीर का शोधन तो करते ही है मगर साथ ही उसके अनेक गुण भी है जिसके कारण वैद्य समाज का मानना है कि "मौत के अलावा" इस बीज को कहीं भी उपयोग में लिया जा सकता है।

यह लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण, कटु, तिक्त तथा, विपाक में कटु और उष्ण वीर्य है। यह रोचक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, ग्राहि, उत्तेजक, वृष्य या बल, शोथहर (सूजन कम करने वाला), दर्द में राहत देता है, गर्भशय संकोचक, कृमिहन, मूत्रल, स्वेदजनक (पसीने से टॉक्सिन) निकालने में मदद करता है। ज्वरहन, दुर्गंधनाशक, गुल्म, आमदोष, शूल, कास, अतिसार, प्रसूतरोग तथा वात व्याधि आदि नाशक है।

इसके सेवन से घृत, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ का पाचन अच्छी तरह हो जाता है। अन्न पचकर क्षुधा (भूख) बढ़ाता है। उदर (पेट) में वात - (वायु) नहीं हो पाता। मूत्रल गुण होने से पूरे शरीर में सूजन, जलोधर, शूल नष्ट होता हैं।

Kidney में जमा टॉक्सिन (Toxin) यानि पथरी (अश्मरी) को धीरे-धीरे मूत्र के रास्ते बाहर निकालने में मदद करता है।

भूमि आँवला:

आयुर्वेद में भूमि आँवला को अन्त: प्रयोग तथा बाहरीय प्रयोग के बारे में बताया गया है। शोध (Detox) के साथ-साथ पोषण और नवीनीकरण का काम करता है।

स्वभाव: - गुण-लघु, रूक्ष
रस - तिक्त, कषाय, एवं मधुर
विपाक - मधुर
वीर्य - शीत

उपयोग विस्तार:-

कफ पित्तशामक दीपन-पाचन यकृत उत्तेजक, स्तम्भन, प्यास शांत करने वाला, रक्तशोधक, रक्तपित्तहर कास-श्वासहर मूत्रल, ज्वरघ्न, बल्य विषघ्न (Detox), शरीर के तापमान को संतुलित करने वाला, बल्य,

विषघ्न (Detox), गर्भाशय शोथहर, कुष्ठघ्न (Skin wellness) इसका लेप जख्मों को भरता है, यह कास हर एवं श्वासहर, नेत्र दोषहर, समस्त यकृत रोग हर (Jaundice, Fatty Liver, Liver cirrhosis, hepatitis, Alcoholic Liver) होता हैं।

उपयोग विस्तारः-

भूमि आँवला शरीर के अंगों की सफाई (Organ Detox) के साथ-साथ उन अंगों (Organs) की कार्यक्षमता को मजबूत भी करता है।

- दीपन-पाचनः पाचनक्रिया को सही करने में जो अग्नि की आवश्यकता होती है उसे प्रदीप्त करता है।
- यकृत उत्तेजक तथा यकृत दोषहर, यकृत (Liver) हमारे शरीर का मुख्य अंग है जोकि पूरे दिन में रस और वसा को पचाने के लिए काम करता है। कहते हैं जो पूरे साल में जितने NASA Chemical Reaction करता है, यकृत (Liver) उतने एक दिन में करता है। यह Jaundice, Fatty Liver, Liver cirrhosis, hepatitis, Alcoholic Liver को सही करने में मदद करता है।

रक्त शोधक, रक्त पित्तहरः-

जब रक्त में टॉक्सिन (Toxin) की मात्रा बढ़ जाती है (Uric Acid, cholesterol आदि) तो जोड़ों में दर्द, नसे ब्लॉक, हृदय रोग (Heart disease), सांस फूलना थकावट तथा त्वचा रोग हो जाते हैं। भूमि आँवला रक्त शुद्ध करके इन रोगों से मुक्ति पाने में मदद करता है।

मकोएः (Solanumnigrum)

आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा पद्धति में मकोए को चमत्कारी औषधि का दर्जा दिया गया है। यह यकृत (Liver) में जमाविष (Toxin) को साफ (Detox) करता है उसकी सूजन उतारता है तथा उसकी कार्यक्षमता को बढ़ाता है। पीलिया (Jaundice), यकृत पर चर्बी (Fatty Liver) बढ़ जाना, सब में इसका उपयोग अच्छा होता है।

यह रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) को बढ़ाने का काम करता है, जिससे सामान्य बीमारियों से बचा सके। यह शरीर के किसी भी हिस्से में आई सूजन को कम करने में सक्षम होता है जिस कारण इसको एंटी इन्फ्लेमेटरी (Anti inflammatory) कहा गया है। जिस

कारण यह शरीर में दर्द को कम करता है और रक्त प्रवाह (Blood Circulation) को सही करने में मदद करता है।

- High BP वालों को मकोए, गोखरू, आँवला, मुलेठी, काली मिर्च जैसी औषधि के सेवन से लाभ मिलता है।
- मूत्रल (Diuretic) होने की वजह से वृक्क (Kidney) में आए विषाक्त पदार्थों (Toxin) को Detox करने में मदद करता है साथ ही साथ रक्त में अम्लता को कम करता है।
- मधुमेह रोगियों के लिए यह फायदेमंद होता है साथ ही मल त्याग (पेट को साफ) करने में मदद करता है। देखा जाए तो यह
- छोटी आंत (Small intestine)
- बड़ी आंत (Large intestine)
- यकृत (Liver)
- वृक्क (Kidney)

सभी मुख्य अंगों (Organs) में से विषाक्त पदार्थों (Toxins) को बाहर निकालने में मदद करता है।

- मकोए में प्रतिउपचायक (Antioxidant) गुण भरपूर मात्रा में होता है जिसके फलस्वरूप शरीर से विजातीय द्रव्य (Free Radicals) निकलते हैं जिस कारण शरीर की कोशिकाएँ (Cells) स्वस्थ होती है तथा शरीर जल्दी बूढ़ा नहीं होता।

गोखरूः (Tribulusterrestris)

आयुर्वेद दवाई एवं Dietary supplements की Industry में गोखरू की मुख्य भूमिका रही है। इसके गुण हर उम्र में Detox, नवीनीकरण और पोषण दोनों में लिया जाता है।

स्वभावः

गुण - गुरू, स्निग्ध
रस - मधुर
वीर्य - शीत
विपाक - मधुर

उपयोग विस्तारः-

- वातपित्त, शामक, अमाशय के लिए बल्य, क्षुधावर्धक (भूख बढ़ाता है), रसायन (ताकतवर), नाड़ी दुर्बल्य (नसों में कमजोरी), वातरोग, प्रमेह, अर्श (बवासीर) कृमि (पेट में कीड़े),

पूरे शरीर में कहीं भी सूजन, (मूत्र में जलन, दुर्गंध, गंदला तथा कष्ट के साथ होना) पुरुषों में Testosterone Hormone को बढ़ाता है। स्त्रियों में गर्भपात, योनि रोग को रोकता है। वृक्क (Kidney) को डिटॉक्स करता है, अश्मरी (stone) को बाहर निकालता है।

- ज्यादा मसालेदार भोजन खाने से वीर्य में उष्णता आ जाती है और शीघ्रपतन, शुक्राणु कमजोर हो जाते हैं, ऐसी अवस्था में गोखरू का सेवन लाभकारी होता है।
- गोखरू का उपयोग फेफड़ों (Lungs) में जमा कफ को (Detox) बाहर निकालने में किया जाता है, तथा खांसी या कफ में खून आता हो ऐसी अवस्था में बहुत फायदेमंद है।
- यह वातपित्त शामक होने के साथ-साथ रक्त शोधक भी होता है, जिसके कारण रक्त डिटॉक्स (Detox) होता है उससे Toxins बाहर निकलते हैं जिसके फलस्वरुप कुष्ठरोग त्वचा संबंधित सभी रोगों में फायदा मिलता है तथा कोशिकाओं (Cells) का नवीनीकारण होता है।

मुलेठी: (Liquorice)

स्वभाव:

गुण - गुरू, स्निग्ध
रस - मधुर
वीर्य - शीत
विपाक - मधुर एवं त्रिदोषनाशक

आयुर्वेद और पोषक आहार के विद्वानों के अनुसार मुलेठी वात, पित, कफनाशक, शोधक (Detoxification) टॉक्सिन बाहर निकालने वाली और शरीर में हीलिंग को बढ़ाने वाली है। जिसके कारण यह किसी भी प्रकार के जख्मों को भरने में सक्षम होती है वह चाहे अंदरूनी हो या बाहरी।

- यह पाचन क्रिया को दुरुस्त करती है जिससे खाये भोजन का सार शरीर में लगता है।
- कफनाशक होने से खांसी, जुकाम, नजला, गला खराब, गले में सूजन को ठीक करके आराम देता है यह best Lungs Detoxification माना जाता है।
- मानसिक तनाव को कम करता है।
- रक्त में बड़े टॉक्सिन, चर्बी को कम करने में मदद करता है।
- यकृत को स्वस्थ रखता है तथा भूख लगाता है।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

- आँखों की रोशनी बढ़ाता है तथा समस्त नेत्र रोगों में हितकारी है।
- मुलेठी में Anti Inflammatory गुण (सूजन कम करने वाला गुण है)
- यह कमजोरी दूर करता है, शरीर बलवान बनाता है, डिटॉक्स (Detox) के समय शरीर को कमजोर नहीं होने देता है।
- मुलेठी- बालों को सफेद होने से रोकता है, बालों को झड़ने से रोकता है तथा उन्हें मुलायम भी रखता है।

काली हरड़/बाल हरड़ (छोटी हरड़)

स्वभाव:

गुण - लघु, रूक्ष

रस - अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय

वीर्य - उष्ण

विपाक - मधुर

प्रधान कर्म:-

दीपन, पाचन, मृदुरेचन, रसायन, मेध्य आदि। आयुर्वेद में छोटी हरड़ को माता के समान गुणकारी कहा गया है। जिस प्रकार एक माँ शिशु का ध्यान रखती है।

उसी प्रकार छोटी हरड़ शरीर से विष (Toxins) को निकाल कर शरीर का ध्यान रखती है।

- छोटी हरड़-बड़ी व छोटी आँतों में मल एवं पुराने जमे मल को आधो मार्ग से बाहर फेंकती है। छोटी हरड़ छोटी आँत में पुराने से पुराने जमे Toxin को नरम कर के शरीर से बाहर फेंकती है।
- कब्ज गैस, अफारा, अम्लपित का नाश करती है।
- बवासीर, खूनी व बादी दोनों में फायदा करती है।
- Ulcer को भरती है।
- त्वचा के समस्त रोग Eczema जैसे असाध्य रोग, इसके सेवन से जीवनदान पाते हैं।
- बच्चों, बुजुर्गो तथा वयस्कों/सभी के लिए गुणकारी है।

सौंठः (Zingiber Officinal)

स्वभावः

गुण - लघु, रूक्ष, स्निग्ध, गुरू, तीक्ष्ण
रस - कटु
वीर्य - उष्ण
विपाक - मधुर

उपयोग विस्तारः-

सौंठ शरीर के पाचनतंत्र को सुधारने में मदद करता है गैस, कब्ज के लिए यह बहुत फायदेमंद है। आंतो की सूजन कम करके Good Bacteria को बढ़ाता है, तथा (Fermentation) सड़न को रोकता है, जिसके कारण यह शरीर में जमे विष (Toxin) को पचाकर शरीर से बाहर निकालने (detoxification) में मदद करता है।

- यह (Antioxident) गुणों से भरपूर होता है जो शरीर में (free redicals) (विजातीय द्रव्य) को बाहर निकालता है।
- यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- जुकाम, खाँसी में लाभ करता है। साथ ही फेफड़ो को साफ करता है।
- शरीर में किसी भी प्रकार के दर्दो को कम करता है।
- सौंठ (Metabolism Activity) को तेज करता है। जिसके कारण यह चर्बी (Fat) को कम करने में सक्षम है।
- सौंठ शरीर में (Nitrical oxide) के स्तर को बढ़ाता है। जिसके कारण रक्त वाहिनी नाड़ियाँ (Artries and Vains) अपने पूरी अवस्था में खुल जाते है फलस्वरूप रक्त का संचार (Blood Circulation) सही हो जाता है।
- मधुमेह (Sugar) के मरीजों को सौंठ का नियमित सेवन लाभप्रद होता है।
- सौंठ रक्त में वसा यानि (LDL बुरा Cholestrol) को कम करने में सक्षम होता है।

छोटी पीपलः

स्वभावः

गुण - लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण
रस - कटु
वीर्य - शीत वीर्य
विपाक - मधुर

उपयोग विस्तारः-

- यह पितशामक होने के कारण (Acidity) को कम करता है।
- मेध्य, शिरोविरेचक होने के कारण यह (Brain tonic) है।
- यकृत उत्तेजक, प्लीहा वृद्धिहर होने के कारण (Fatty Liver, Enlarge Spleen, Jaundice, SGot, SGPT) को सही करता है।
- वातानुलुलोमन, शूलप्रशमन, गुण होने के कारण यह (Natural Pain-Killer) का काम करता है।
- कफवात शामक होने के कारण फेफड़े को (Detox) करता है, खांसी, जुकाम, नज़ले में बहुत फायदेमंद होता है।
- रक्तवर्धक एवं रक्तशोधक होने के कारण (Skin एवं Blood) को (Detox) करता है।
- रसायन बल्य- अल्प मात्रा में सेवन करने से शारीरिक ताकत बढ़ती है।

काली मिर्च (Piper Nigrum)

स्वभावः

गुण - लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण
रस - कटु
वीर्य - उष्ण
विपाक - मधुर

उपयोग विस्तार:-

- यह कफवातनाशक, कफनिस्तारक होने के कारण फेफड़ों (Lungs) को (Detox) करता है। खांसी, जुकाम, नज़ले में बहुत फायदेमंद होता है। (Lungs) में ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाता है।
- दीपन, पाचन, कृमिघ्न होने के कारण पेट के समस्त रोगों में फायदेमंद होता है।
- लालास्त्रावजनक, उत्तेजक होने के कारण (Digestive Juice) को बढ़ाती है।
- मूत्रल, स्वेदल ज्वर हर होने के कारण शरीर में जमे पुराने (Toxins) को (Detox) करता है।
- इसके अलावा नाड़ी दोर्बल्य, अजीर्ण प्रमेह, शूल, प्रतिश्याय मूत्रकच्छ एवं नेत्रविकार नाशक है।

Precaution (सावधानी):-

- गर्भवती महिला इसे प्रयोग न करें।
- 12 साल से कम आयु के बच्चे डाक्टर की सलाह से लें।
- अगर आप किसी घटक से Alergic हो तो ना इस्तेमाल करें।
- अन्य औषधि के कारण 1 घंटे के अंतराल में इसका प्रयोग करें।
- पानी का सेवन ज्यादा से ज्यादा करें।
- यह स्वाद में थोड़ा कड़वा है कड़वाहट कम करने के लिए थोड़ा सा नमक चाट लें, High B.P. वाले ऐसा ना करें।
- लिखी गई मात्रा से ज्यादा ना लें।
- दस्त, मरोड़ की अवस्था में इसका सेवन रोंक दें, ठीक होने के बाद दोबारा ले सकते है।

About the Detox Organ Kit

Detox Organ (Powder)

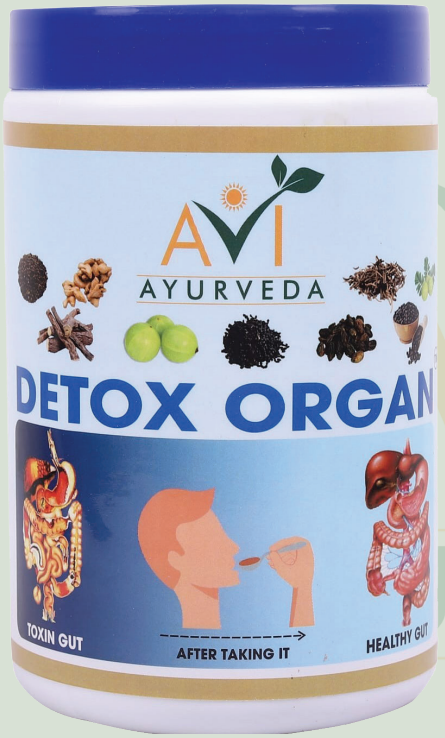

इस योग के प्रयोग यकृत (लीवर), किडनी, छोटी व बड़ी आंत, त्वचा, धमनियों में जमें (Toxins) विषाक्त पदार्थों को साफ करने में मदद करता है।

Doses: 3-5 ग्राम चूर्ण उष्ण जल अथवा साधारण तापमान वाले जल से दिन में 2 से 3 बार सेवन करें।

Detox Organ (Capsules)

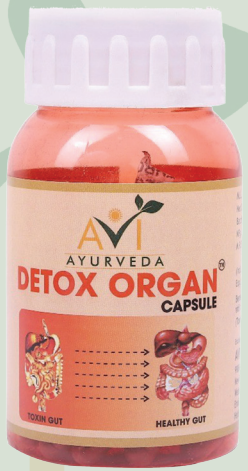

इस योग के प्रयोग यकृत (लीवर), किडनी, छोटी व बड़ी आंत, त्वचा, धमनियों में जमें (Toxins) विषाक्त पदार्थों को साफ करने में मदद करता है। पूरे शरीर की सूजन को कम करता है।

- यह योग प्राकृतिक एंटीबायोटिक, एन्टीफंगल का काम करता है।
- यह चर्बी को कम करके वजन को संतुलित करता है।
- लीवर बड़ जाना, लीवर पर वसा को कम करता है।
- त्वचा को साफ करता है।

Our Other Products

Sampuran Anand (Powder)

इस योग सप्त धातु वर्धक, पुष्टिकारक, शारीरिक, मानसिक बल, काम शक्तिवर्धक, नपुसंकता व शीघ्रपतन नाशक, सभी उम्र के स्त्री-पुरूष के लिए पूरक आहार, अस्थि व जोड़ो को मजबूत करने में मदद करता है। वजन को संतुलित करता है।

Doses: 14-20 साल 1 से 1.5 ग्राम चूर्ण दिन में 2 बार

20-40 साल 3 से 5 ग्राम चूर्ण दिन में 2 बार दूध, जल, शहद से ले सकते है अथवा चिकित्सकीय परामर्श से लें।

Sampuran Anand (DS-Pouch)

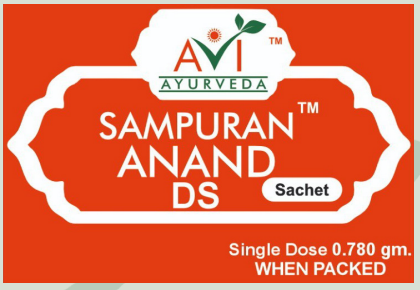

- काम शक्ति वर्धन करता है।
- नपुंसकता व शीघ्रपतन नाशक
- लिंग में रक्त संचार बढ़ाता है।
- उत्तेजना बढ़ाना
- नाड़ी दोर्बल्यहर

Doses: पाउच दिन में 2 बार

शहद, मलाई, सफेद मक्खन, अथवा दूध के साथ ले अथवा चिकित्सकीय परामर्श से लें।

Exclusive Mfg. for:

AVI Ayurveda

9988-E, Sarai Rohilla, New Rohtak Road, New Delhi – 110005

Website: www.aviayurveda.com | Email: avaiyurveda456@gmail.com

Helpline No.: 09910126560